आमवात

संधी प्रदेश मे प्रमुख रूप से पाये जाने वाले संधिवात, वातरक्त, संधिग्रह आदि मे आमवात एक प्रमुख व्याधी है।.
आमवात का सर्वप्रथम वर्णन माधव निदान मे आया है।
यह रोग शरीर की छोटी बडी सभी संधियों तथा किसी भी आयु वर्ग मे हो सकता है परंतु यह अधिकर प्रौढ़ावस्था तथा स्त्रियों मे होता है।.

जब आम, वात एक साथ कुपित होकर शरीर मे कोष्ठ, त्रिक प्रदेश और संधियों मे प्रविष्ट होकर शोथ, शूल व स्तब्धता उत्पन्न करते है तब यह आमवात रोग कहलाता है।.

"~~युगपत्कुपितावन्तास्त्रिकसन्धिप्रवेशकौ~~ ।
स्तब्धं च गुरुतो गात्रमामवातः स उच्यते ॥" (मा. नि. 25/5)

निदान - ~~विरुद्धाहारचेष्टस्य मन्दाग्नेर्निश्चलस्य~~ च ।
स्निग्धं भुक्तवतो ह्यन्नं व्यायामं कुर्वतस्तथा ॥. (मा. नि. 25/1)

इसके ~~आल~~ अलावा जब भी आमदोष एवं वातदोष प्रकोपक निदान एक साथ मिलते हों, आमवात उत्पन्न करते हैं।.

सम्प्राप्ति - निदान सेवन से प्रकुपित वायु, निदान सेवन से निर्मित 'आमदोष' ~~से प्रेरित होकर स्वधर्मी श्लेष्मा के मुख्य~~ को लेकर स्वधर्मी श्लेष्मा के मुख्य स्थान आमाशय, उर., संधी, शिर, कंठ की ओर ले जाकर धमनियों मे पहुंच जाता है। धमनियों मे स्थित व त्रिदोष से मिलकर आमदोष और भी अधिक दूषित हो जाता है।.
यह अधिक दूषित आमदोष पिच्छिलता, अभिष्यन्दता, गौरवता आदि गुणों से स्त्रोतसों को दूषित कर देता है। तथा शरीर मे दुर्बलता, हृदय मे भारीपन, एवं क्लेदता उत्पन्न करता है।.

- आमदोष श्लेष्मा स्थान त्रिक - जानु - कूर्पर - मणिबंध मे अंगुलसंधियों मे स्थान संश्रित होकर आमवात रोग उत्पन्न कर, वायु की चंचलता के कारण एक संधी से दूसरी संधी मे स्थानांतरित होता रहता है।

Scanned with CamScanner

सम्प्राप्ति घटक -

दोष - त्रिदोष (वातप्रधान), आम दोष
दूष्य - रस, रक्त, मांस, स्नायु, अस्थि, संधी कण्डरा
स्रोतस - रसवह स्रोतस
स्रोतोदुष्टि प्रकार - संग
अधिष्ठान - सर्व संधियां
उद्‌भव स्थान - आमाशयोत्थ
रोगमार्ग - मध्यम रोगमार्ग
स्वभाव - आशुकारी, कष्टप्रद
अग्नि - जठराग्निमांद्य, धात्वाग्निमांद्य
साध्यासाध्यता - नवीन रोग - साध्य
द्विदोषज - याप्य
त्रिदोषज - असाध्य
} वस्तुतः याप्य

भेद - ① लक्षण की तीव्रता के अनुसार
① - आशुकारी (तीव्रावस्था)
② - चिरकारी (जीर्णावस्था).

② दोषानुसार अवस्था
① वातोल्बण
② पित्तोल्बण
③ कफोल्बण
④ सान्निपातज

पूर्वरूप - अग्निमांद्य, आलस्य, अंगमर्द, लालास्राव, हृद्‌गौरव, अरति निद्रानाश, रोमहर्ष ·

लक्षण - "अंगमर्दोऽरुचिस्तृष्णा ह्यालस्यं गौरवं ज्वरः ।
अपाकः शूनताऽङ्गानामामवातस्य लक्षणम् ॥ (मा०नि०25/6)

"कट्यां व्यथा भवेन्नित्यं संधिषु श्वयुर्भवेत् ।
उत्थानेऽत्यसमर्थत्वमामवातस्य लक्षणं ॥ (र०र०स. 21/46)

Scanned with CamScanner

चिकित्सासूत्र

① निदान परिवर्जन 'संक्षेपत: क्रियायोगो निदानपरिवर्जनं'।

② लघनं स्वेदनं तिक्तं दीपनानि कटूनि च ।
विरेचनं स्नेहपानं बस्तयश्चामममारुते ।।
सैंधवाद्येनानुवास्य क्षारबस्ति प्रशस्यते ।। (चक्रदत्त 25/1)

चिकित्सा

① संशोधन - ① लंघन-पाचन - पञ्चकोल चूर्ण, अजमोदादि चूर्ण, त्रिकटु चूर्ण

② स्नेहन - केवल जीर्णावस्था मे - (बाह्या) - सैंधवादि / बृ. सैं. / प्रसारिणी तैल
- आभ्यंतर - एरण्ड तैल + गोमूत्र

③ स्वेदन - नवीन अवस्था मे - बालुका स्वेद - 10-20 min तक
- सैंधव लवणस्वेद - " "

④ विरेचन - हरीतकी चूर्ण, एरण्ड तैल, कंसहरीतकी, त्रिवृत चूर्ण

⑤ बस्ति - अनुवासन - (सैंधवादि / नारायण तैल) - 50 - 100 ml
निरुह : एरण्डमूलादि, दशमूलादि,
क्षारबस्ति (इमली, सौंफ, गुड़, सैंधव, गोमूत्र).
वैतरण बस्ति (इमली, गुड़, सैंधव, गोमूत्र, तैल).

② संशमन

र/भ. - 125- 250 mg मधु

आमवातारि रस, मल्लसिंदूर, समीरपन्नग रस, महावातविध्वंस रस, सुवर्ण भूपति रस, वातगजांकुश, योगेन्द्र रस, रसराज रस, श्रृंग भ., गोदंती भ.

वटी 250 - 500 mg सुखोष्ण जल

संजीवनी वटी, अग्नितुण्डी वटी, चित्रकादि वटी, आमवातारि वटिका

लौह 250 - 500 mg मधु

त्रिफलादि लौह, विडङ्गादि लौह, पंचानन रस लौह

गुग्गुलु 500 - 1000 mg सुखोष्ण जल

सिंहनाद गु, योगराज, महायोगराज, वातारि गु., त्रयोदशाङ्ग गु., शिवा गु., गोक्षुरादि गु, अमृतादि गु., पुनर्नवादि गु.

Scanned with CamScanner

चूर्ण 2-6 gm उष्णोदक, दशमूल क्वाथ·

पथ्यादि चूर्ण, पंचकोल चूर्ण, अजमोदादि चूर्ण, वैश्वानर चूर्ण, नागरादि चूर्ण, त्रिकटु चूर्ण, पंचसम चूर्ण, नारसिंह चूर्ण।

क्वाथ 20-40ml जल / स्वतंत्र रूप मे·

धान्यपंचक क्वाथ, रास्ना सप्तक क्वाथ; पुनर्नवादि; महारास्नादि, दशमूल

आसव/ अरिष्ट - 20-40ml जल

पुनर्नवासव, अश्वगंधारिष्ट, दशमूलारिष्ट, बलारिष्ट·

पाक/ अवलेह 10-20gm·

एरण्ड पाक, गोक्षुरादि अवलेह·

घृत 10-20ml दूध, उष्ण जल

शुण्ठी घृत, गुडूची, अश्वगंधा घृत·

तैल - आभ्यंतर - एरण्ड तैल - 20ml रात्री मे (5-7 दिन तक)।
बाह्य - बला, प्रसारिणी, सैंधवाद्य, महानारायण तैल·

रसायन - अमृत भल्लातक, अश्वगंधा, गुडूची, रास्ना

एकल औषधियां - शुण्ठी, रास्ना, चोपचीनी, पुनर्नवा, कुचला, अश्वगंधा, लहसुन, भल्लातक, गुडूची।

Scanned with CamScanner

आदर्श चि. पत्र

① निदान परिवर्जन

② लघु - रूक्ष - उष्ण - तिक्त - कटु आहार

③ सामावस्था (नवीन अवस्था) - रूक्ष स्वेद, आमपाचन
निरामावस्था (जीर्णावस्था) - स्नेहन, स्वेदन; मृदुरेचन; बस्ति

④ - शुद्ध कुपीलु - 65 mg
श्रृंग भ. - 250 mg
आमवातारि रस - 125 mg
अजमोदादि चूर्ण - 3 gm
1 x 2

- संजीवनी वटी - 2 TDS
सिंहनाद गु. - 2 TDS

- दशमूल क्वाथ - 40 ml BD

- एरण्ड तैल - 20 ml. रात्रि मे

- अमृत भल्लातक - 5-10 gm / 1 x 2 दूध से

⑤ नियमित व्यायाम, चंक्रमण, योगासन

⑥ पथ्य पालन

पथ्यापथ्य

पथ्य - आहार - शुण्ठी, आर्द्रक, अजवाइन, सौंफ, मरिच, सैंधव, हिंगु, लशुन, जीरक, सहजन, परवल, करेला, यव, कोदो, तक्र, कुलथी, गोमूत्र, उष्णोदक, रक्त।

विहार - रूक्षण, स्वेदन, लंघन, चंक्रमण, मृदु व्यायाम, उष्ण वस्त्र

अपथ्य - आहार - दधी, मत्स्य, गुड़, दुग्ध, माष, आनूपमांस
विरुद्ध - गुरु, असात्म्य भोजन, पिष्टान्न, गरिष्ट भोजन।

विहार - पूर्वी वायु, वेगधारण, रात्रिजागरण, आलस्य
चिंता, शोक, मेघाच्छन्न आकाश आदि।

"आमवात गजेन्द्रस्य शरीर वन चारिणः।
विद्यन्यसावेक एव एरण्ड स्नेह केशरी॥" (भै. र. 29/13)